B तटीय नगर

① सुतकांगेडोर > यह अरब सागर के तटपर बालुचिस्तान (पाकिस्तान) में करांची से पश्चिम 50 KM की दुरी पर स्थित है

② R.L. Stein ने इसे 1927 में खोजा

③ यह दस्क नदी के पुर्वी तट पर स्थित है।

④ यह नगर दो भागों में विभाजित था - नगर दुर्ग और निचला शहर।

⑤ सुतकांगेडोर प्रमुख व्यापारिक स्थल था जो हड़प्पा और बेबीलोन के मध्य व्यापार के क्षेत्र में महत्वपुर्ण भूमिका निभाता था।

⑥ आजकल यह बस्ती सुखे बंजर मैदानो के बीच अवस्थित है।

नोट :— सुतकांगेडोर एकमात्र स्थल है जो प्राकृतिक चट्टानोंपर अवस्थित है।

बालाकोट

① यह भी बन्दरगाह नगर था जो करांची से 98 KM दुर पर स्थित है

② यहां प्राक सैन्धव एवं विकसित सैन्धव सभ्यता के अवशेष मिले है।

③ बालाकोट का सबसे समृद्ध उद्योग (सीप उद्योग shell Industries) प्रसिद्ध था

④ बालाकोट निर्यात का प्रमुख केन्द्र था

अल्लाह दिनो

① सिन्धु और अरब सागर के संगम से करिब 16 KM उत्तपुर्व तथा करांची से 40 KM पुर्व में यह स्थित है।

② अल्लाह दिनो भी अपनी उन्नत कलात्मक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है जो एक तटीय नगर था

③ भारी का खिलौना गाड़ी यहां से प्राप्त हुआ है।

लोथल

Scanned by TapScanner

04

लोथल

[1]→ गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद जिले के धोलका तालुक मे अहमदाबाद से 80 KM दक्षिण में भोगवा नदी के निकट हड़प्पा कालीन सभ्यता के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था।

(2) सिन्धु सभ्यता कालीन सामुद्रीक व्यापारि सबसे पहले यहां आए और तदुपरान्त उन्होने यह बस्ती बसाली जिसके परिणाम स्वरूप 2450 BC में इसपर नगर की स्थापना हुई।

(3) उत्खननो से जो लोथल की नगर योजना एवं अन्य भौतिक वस्तुए प्रकाश में आयी है उससे लोथल एक लघु हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ो नगर प्रतीत होता है।

(4) लोथल भी दो भागोमे बटा हुआ था —— नगर दुर्ग और निचला शहर

नोट: यहां पुरी बस्ती एक दिवार से घिरी थी

(5) नगर दुर्ग के निकट ईटो के चबुतरे (48.5 × 42.5 × 3.5 मी० पर निर्मित एक अन्नागार 12 छोटे-छोटे प्रकोष्ठो में विभक्त है इसके द्वारा लोथल की अर्थपुर्ण व्यवस्था पर महत्वपुर्ण प्रकाश पड़ता है।

(6) लोथल के उतर में एक बाजार और दक्षिण में औद्योगिक क्षेत्र था।

(7) लोथल की निचले नगर की गली सं० 1 में दो या तीन कमरे वाली दुकाने तथा चार या पांच कमरे वाली व्यापारियों के मकान मिले है।

(8) लोथल के बाजार में शंख का कार्य करने वाले दस्तकारों और ताम्रकर्मीयो के कारखाने थे नगर दुर्ग के पश्चिम में विभिन्न आकार के 11 कमरे मिले है जिनका प्रयोग मनके के दाना बनाने की फेक्ट्री के रूप में होता था

(9) फारस की खाड़ी की प्रदेश वाली मुद्रा (Seals) और पके रंग के रंगे हुए पात्रों की उपलब्धियों से स्पष्ट होता है कि लोथल सिन्धु सभ्यता काल में सामुद्रीक गतिविधियों का केन्द्र था

(10) U.P.P.C.S. 2001 लोथल में पकी ईट से बना एक निर्माण (214 × 36 × 4.5 मी) मिला है इसे पुरातत्वविद्दो ने एक गोदीवारा (डकयार्ड) बतलाया है।

Scanned by TapScanner

इसकी खोज S.R.Raw ने की थी यह गोदी या डकयार्ड 90
हड़प्पा कालीन संसकृती का ईंटों से बनी सबसे बड़ी संरचना है

(11) यहां बर्तन के टुकड़े पर लगा हुआ चावल मिला है।

(12) लोथल से सूती वस्त्र मिला है।

(13) लोथल में राई का कुंड मिला है

(14) लोथल से पुरा का पुरा हाथी दांत मिला है।

(15) लोथल एक ऐसा स्थल है जहां दरवाजे बगल की गलियों में न खुलकर सामने सड़क पर खुलते थे।

(16) यहां से मम्मी [Mummy] के उदाहरण मिले है जो मिश्र के साथ सम्बन्ध को प्रस्तुत करता है।

(17) मिट्टी की बनी दो पशु आकृतियां मिली है जिसे पुरातत्व विद गाय के रूप में पहचान करते है।

(18) लोथल के एक मिट्टी के बर्तन पर बारहसिंघा की आकृति अंकित है।

(19) लोथल से - हाथी दांत का एक पैमाना मिला है।

(20) लोथल से युगल शवधान के साक्ष्य मिले है जो सम्भवतः सतीप्रथा प्रथा का द्योतक है।

(21) लोथल से एक ऐसा खिलौना मिला है जिसमें व्यक्ति दो पहियों पर बैठा दर्शाया गया है।

(22) लोथल के एक जार पर ऐसा चित्र बना है जो पंचतंत्र की कहानी "चालाक लोमड़ी" का रूपान्तरण है।

(23) लोथल से एक बर्मा (सीढ़ी) मिला है

(24) लोथल से कुम्हार का चाक मिला है।

(25) लोथल से एक कांसे की सुई मिली है जिसमें ऊपर छिद्र है।

(26) लोथल से सर्वाधिक बतक के चित्र मिले है

(27) लोथल से पांच प्रकार के नावों का मॉडल मिला है।

(अन्य नगर और कस्बे)

चान्हुदड़ो

(1) यह पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में सरकण्ड के निकट मोहनजोदड़ो से 130 Km दूरी में स्थित था

(2) चान्हुदड़ो में सिर्फ एक टीला था जो जल कटाव के कारण अनेक भागों में बट गया था

(3) इस कस्बे से 20 Km दूर सिन्धु नदी बहती थी

(4) यहां के उत्खननों से हड़प्पा कालीन एवं उत्तर हड़प्पा कालीन संसकृतीयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned by TapScanner

(5) चान्हुदड़ो से प्राप्त प्रमाणों से यह पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है कि यह उन सुन्दर मणियों या मुद्राओं के उत्पादन का मुख्य केन्द्र था जो हमें हड़प्पा कालीन स्थलों से प्राप्त हुई है।

(6) शिलो को काटने के लिये प्रयुक्त होने वाले अनेक चमु के औजार भी हमें यहां से प्राप्त हुए है, ताम्बे और कांसे के औजार और सांचों के भण्डार मिले है जिससे स्पष्ट है कि मनके बनाने, हड्डियों की वस्तुए बनाने, मुद्राए बनाने में यहां के दस्तकार निपुण थे।

(7) चान्हुदड़ो एक मात्र सिन्धु शहर है जिसके नगर दुर्ग नहीं है वस्तुतः इस नगर में दस्तकार और कारीगर लोग रहते थे।

(8) चान्हुदड़ो से वक्राकार ईंट मिले है।

नोट: सम्पूर्ण हड़प्पा कालीन सभ्यता से जो ईंट मिले है उनका अनुपात 4 : 2 : 1 है

(9) चान्हुदड़ो से ताम्बे से बनी बैलगाड़ीयों के मॉडल मिले है।

(10) चान्हुदड़ो से चारपहियों वाली गाड़ीयो के खिलौने मिले है जिसके अगले के पहिए पिछले के पहियो की अपेक्षा छोटे है।

(11) चान्हुदड़ो से एक ऐसी मुद्रा मिली है जिसपर तीन घड़ीयाल व मछलीयों का अंकन है।

(12) चान्हुदड़ो से ईंटों के प्रमाण मिले है जिसपर बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते का निशान है।

(13) चान्हुदड़ो से काजल, चेहरे का प्रलेप, कंघा और छुरा मिला है

(14) उत्खनन से इसे सेबनी दो दरवाजो वाली एक भट्टी मिली है जिसका प्रयोग सेलखड़ी के मनकों का पकाकर चमकाने के लिए कियाजाता था।

कोटदीजी

(1) यह स्थल पाकिस्तान स्थित सिन्ध के खैरपुर नगर से 25 KM दक्षिण और मोहनजोदड़ो से 41 KM पूर्व में है

(2) यहां से हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालके सभ्यता के अवशेष मिले हैं

(3) हड़पा पूर्व की संस्कृति के पत्थर का प्रयोग विशेष तौर पर बाणाग्र तथा ताम्बे और कांसे का उपयोग अल्पमात्रा में हुआ है।

(4) उत्खनन से उपलब्ध साक्ष्यों विदित होता है कि इस स्थल में प्राक सिन्धु सभ्यता से सम्बन्धित बस्ती का विनाश आगी

कालखंड में हुआ और कालान्तर में सिंधु सभ्यता के लोग यहाँ आकर बस गये

(5) यहाँ गलीयों सहित सुव्यवस्थित नगर योजना, पत्थर के निवर्ह बने बड़े बड़े मकान तथा मिट्टी के कच्ची ईंट की बने को सड़के की चौड़ाई से पक्की हुई मकान तथा कच्ची ईंट से बने बड़े आकार के चूल्हे पाये गये है।

(6) सेलखड़ी की टूटी हुई एक मुहर, कुछ उत्कीर्ण बर्तन के टुकड़े, पक्की मिट्टी के मनके, कार्नेलियन और लाजवर्द युक्त गोमेद के मनके, ताम्रकालय की चीज के मनके, कम कीमती और बकायदे युक्त गोमेद के मनके, तांबे की धातु की एक कुल्हाड़ी, एक छेनी, पत्थर की चौकी, बाणों का अग्रभाग (धातु) पक्की मिट्टी के बने यक्ष मातृदेवी की पांच लघु मूर्तियां इत्यादि प्राप्त हुई है।

देसलपुर / देशालपुर

(1) यह गुजरात राज्य के भुज जिले के नखत्राणा तालुक में गुंथली के समीप भादर नदी के किनारे स्थित है।

(2) यह नगर किलाबन्द था और यह किला कार काटकर समतल बनाये गये पत्थरों से बनाया गया था और इन पत्थरों को मिट्टी के गारे से जोड़ा गया था

(3) इस नगर के मध्य में विशाल दिवारों वाला एक भवन था जिसमें छज्जे वाले कमरे बने थे

मिताथल

(1) यह स्थल हरियाणा के भिवानी जिले में स्थित है

यहाँ के मृदभाण्ड काली बंगा के प्रथम काल के मृदभाण्डो से मिलते जुलते हैं

(2) यहाँ के मृदभाण्ड काली बंगा के प्रथम मृदभाण्डो से मिलते जुलते हैं। कच्ची ईंट का प्रयोग भवन निर्माण में होता था इस काल में कच्ची ईंट का प्रयोग भवन निर्माण में होता था। इस काल की संस्कृति सैन्धव संस्कृति है। जिसके अवशेष दूसरे काल की संस्कृति के विकासशील और पतनोन्मुख दो चरणों में विभक्त की गई है

(3) यहाँ से ताम्बे की कुल्हाड़ी मिली है।

आलमगीरपुर

(1) यमुना की सहायक नदी हिंडन के तट पर बसा यह स्थल मेरठ से 30 KM पश्चिम UP में स्थित है यहाँ से सैन्धव सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है आलमगीर पुर से पूर्व सैन्धव सभ्यता के अवशेष गंगा यमुना के दोआब से उपलब्ध नहीं हुए है।

(2) उत्खनन से सिन्धु मृदभाण्ड, मृणमूर्ती, मनके इत्यादि मिली है। ये सब सारी चिजें हड़प्पा संस्कृति के अंतिम काल के है यानी जब यह सभ्यता पतन की ओर अग्रसर थी

नोट - आलमगीर पुर से अभी तक कोई मुद्रा प्राप्त नहीं हुई है।

रूपण / रोपण

① यह भारत के पंजाब राज्य में स्थित है जो सतलज नदी के तट पर बसा हुआ था।

② यहाँ हड़प्पा संस्कृति के साथ-साथ हड़प्पा पूर्व की संस्कृति भी पायी गयी है।

③ यहाँ से मानव के साथ-साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण मिला है।

रोजदी

① यह गुजरात के राजकोट जिले के भादर या मादर नदी के किनारे है।

② इस स्थल पर उत्खनन से हड़प्पा कालीन बस्तीयों के अवशेष मिले हैं।

③ यहाँ से कच्ची ईंटों से बने चबूतरे नालीयों सहित बिल्लौर एवं गोमेद पत्थर के बने बाट, बिल्लौर के छेददार मनके, पक्की मिट्टी के मनके ताम्बे के वस्तुएँ और अभिलिखित मिट्टी के टुकड़े मिले हैं।

रंगपुर

① यह गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में लोथल से 50 KM पूर्व भादर नदी के तट पर स्थित है।

② यहाँ से प्राक हड़प्पा तथा हड़प्पा कालीन दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।

③ यहाँ से मुहरें और मातृदेवी की मूर्ती नहीं मिली है।

④ यहाँ से चावल की भूसी प्राप्त हुई है। (चावल के अवशेष मिले)

मांडा

① यह स्थल पिर पंजाल पर्वतमाला की तराई में चिनाब नदी के दायें तट पर जम्मू से पश्चिम पच्चास KM की दूरी पर स्थित है।

⑪ यहाँ से हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा कालीन संस्कृति के अवशेष मिले।

संघोल

① यह पंजाब राज्य के लुधियाना जिले में स्थित है।

(ii) यहाँ से ताम्बे के दो छेनीयाँ पायी गयी हैं।

(iii) यहाँ से अग्नि कुण्ड के साक्ष्य मिले हैं जो त्रेता काल है।

कुणाल

① यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है।

(ii) सरस्वती नदी के किनारे बसा हुआ था।

(iii) कुणाल एकमात्र स्थल है जहाँ से चाँदी के दो मुकुट मिले हैं।

Scanned by TapScanner

सुरकोतदा

(i) यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है जो एक महत्वपूर्ण प्राचीर युक्त सिन्धु कालीन बस्ती थी

(ii) यहाँ एक, नगर दुर्ग और पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 130 x 65 मी० की आकार की आयताकार योजना पर बनी एक विशाल अवासीय बस्ती थी।

(iii) सुरकोतदा के दुर्ग को पिली कुटी हुई मिट्टी से निर्मित चबूतरे पर बनाया गया था

नोट :— (i) इस स्थान से अंतिम स्तर पर घोड़े की हड्डियाँ मिली है जो किसी भी हड़प्पा कालीन स्थल से प्राप्त नहीं हुई है

(ii) घोड़े की दांत सुतकांगेडोर से प्राप्त हुई है।

कालीबंगा

3500+2600 BC

(i) कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ होता है "काले रंग की चुड़ीयाँ"

(ii) राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के दक्षिणी किनारे पर कालीबंगा अवस्थित है।

(iii) मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की भांति कालीबंगा में भी दो टिले थे पश्चिमी टिला छोटा था तथा पुर्वी टिला बड़ा था जहाँ से क्रमशः नगर दुर्ग और निचले नगर के अवशेष प्राप्त हुए है

(iv) कालीबंगा से हड़प्पा पुर्व और हड़प्पा कालीन संसकृति की जानकारी प्राप्त होती है।

(v) हड़प्पा पुर्व की खोजो में एक समानान्तर चतर्भुज दुर्ग या किला मिला है। जिसके अन्दर पुर्व की ओर अभिमुख किये हुए अच्छि तरह से बनाये गये मकान बने थे एक सधारण मकान में एक आंगन कुछ कमरे, गड्ढे खोदकर बनाये गये चुल्हे इत्यादी होते थे।

(vi) कालीबंगा में किये गये उत्खननों से खेतों में हल द्वारा जुताई, ताम्बा गलाने की तकनीक का ज्ञान होना, कोमेद और स्फटिक के फलको (बलेडो) के प्रयोग के प्रमाण और छः विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तनों के अवशेष मिले है।

नोट: — (i) कालीबंगा से लकड़ी के हल प्राप्त हुए है।

(vii) हमें यहाँ हड़प्पा कालीन संसकृतिक युग के पांच स्तरों का पता चलता है सम्भवतः भुकम्पिय विनाश के कारण इस नगर को लोग कुछ समय के लिए परित्याग कर दिया गया।

Scanned by TapScanner

(VIII) नगर दुर्गों के दक्षिणी भाग में कच्ची ईंटों द्वारा निर्मित चबूतरे पर एक दो पंक्ती है [सात अग्नि कुण्ड] बने थे इसके निकट बने कुंए और पगडण्डियाँ थी स्नान आचमन और कर्म काण्ड के लिए प्रयोग किया जाता होगा।

(IX) एक कुंए के साथ जुड़े चबूतरे और आयताकार गढ़े में पक्की ईंटों से बनी अग्नि कुण्ड (वेदियां) से पशुओं और हिरणों की हड्डी मिलि है। इससे यह संकेत मिलता है कि यहाँ पशु बली दिया जाता होगा।

(X) निचले नगर में भी यह अग्नि कुण्ड मिली है।

(XI) काली बंगा का निचला नगर भी प्राचीर या किले बन्दी से युक्त था। और इसमें दो प्रवेश द्वार थे।

(XII) काली बंगा में पक्की ईंट का प्रयोग, कुंओं, स्नान गृहो, मार्गों और नालीयों को बनाने के लिए किया जाता था।

(XIII) बेलनाकार मुहर और मिट्टी की छोटी मुहरें महत्वपूर्ण अभिलिखित वस्तु थी। मिट्टी के मुहरों पर सरकण्डे की छाप या निशान से यह लगता है कि इनका पेकिंग के लिये प्रयोग किया जाता था

नोट :- (1) एक शिल पर किसी अश्वत्थ देव की आकृति उकेरी (2) काली बंगा की एक कुड़ा पर व्याघ्र का अंकन है।

(3) काली बंगा से प्राप्त बेलनाकार मुहर मेसोपोटामिया से प्राप्त मुहरों के समरूप थी

(XIV) बस्ती के दक्षिण की ओर एक कब्रिस्तान था जिससे शवस्थान के तीन प्रकार के प्रथाओं का पता चलता है।

[A] शवधान सामग्री या वस्तु सहित आयताकार गढ़ढे भी

(b) शवविहीन अंडाकार या आयताकार गढ़ जिसमें मृतक की अन्त्येष्टि कर जाता था और उसकी समाधि को प्रतिक के रूप में बना दिया जाता था

(c) स्वगलोक के बाद बचीरख या अस्थियों को तथा खप्पर वस्तुओं को मिट्टी के छोटे छोटे बर्तनों में रखकर बहुत बड़े पृथ्वी पात्र में डुबाकर उन्हें दफनाना,

(XV) कुछ कंकालों के अध्ययन से रोगों या बिमारीयों के बारे में भी रोचक तथ्य प्रकाश में आये है। एक बच्चा के कपाल का विश्लेषण से जल कपाली या मस्तिष्क सोथ के

के बिमारी का पता चलता है क्योंकि बिमारी का इलाज करने के लिए कपाल में छिद्रित किया गया था और किसी औजार को गर्म करके कपाल में दागा गया था चिकित्सा की यह आदिम पद्धति Trepenation (ट्रेपेनेशन) कहा जाता है।

नोट- ① चिकित्सा की इस आदिम पद्धति Trepenation का उपयोग लोथल एवं बुर्जहोम में सिर दर्द की चिकित्सा के लिए भी किया जाता था।

(ii) कालीबंगा से एक ऐसा घाव मिला है जो हड़प्पा सभ्यता के उत्तर दक्षिण के विपरित पूर्व पश्चिम में दफनाया गया है

(iii) कालीबंगा से एक पल्ले किवाड़ पाया गया है।

(iv) कालीबंगा से कपड़ा में लिपटा हुआ छुरा मिला है

(v) कालीबंगा से सार्वजनिक नालियों के साक्ष्य नहीं मिले हैं

(vi) कालीबंगा से सड़कों को पक्का करने के इक्का-दुक्का प्रमाण मिले हैं।

बनवाली / वनवाली

① यह हरियाणा राज्य के हिसार जिले में अवस्थित है।

② यह रंगोई नाले जिसकी पहचान सरस्वती नदी के प्राचीन (संरक्षण कि गई है) के किनारे बसी थी

③ यहां के उत्खनन से सिन्धु पूर्व, सिन्धुकालीन तथा उत्तर सिन्धु कालीन संस्कृतियों का पता चलता है।

④ वनवाली की सभ्यता का द्वितीय युग हड़प्पा कालिन था किन्तु इसकी नगर योजना अन्य हड़प्पा कालिन नगरों से भिन्न है। सड़के कभी भी न तो सिधा मिलती है और न ही एक दूसरे को समकोण पर काटती है। यहां के आवासीय क्षेत्र या भवन खण्ड केवल समिपस्थ सड़कों की ओर ही अभिमुख है। बनवाली में जल निकास प्रणाली जो सिन्धु सभ्यता की सर्वप्रमुख विशेषता थी, का अभाव है।

नोट ① यहां नगर दुर्ग के अन्दर अन्य क्षेत्र दुर्ग भी विद्यमान थे

(ii) ——— नगर दुर्ग के दिवारों पर चावल की भूसी और गोबर और मिट्टी के साथ खुब अच्छे तरह बनाए गये मसाले से पलास्टर किया गया था

⑤ यहां काफी मात्रा में जौ पाया गया है सहां

⑥ यहां हल (खिलौना) मिला है

(7) बनावाली से खिड़कों पर बैलगाड़ी के पहियों का निशान मिला है जिसके बीच की दूरी लगभग 3 फीट थी है जितना आज के पहियों के बीच होती है

दैमाबाद

(1) महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में प्रवर नदी के किनारे पर अवस्थित था यहां से सैन्धव सभ्यता के कुछ साक्ष्य प्राप्त होते हैं दैमाबाद सैन्धव सभ्यता का सर्वाधिक दक्षिणी स्थल है - ऐसा लगता है कि यहां सैन्धव निवासी उत्तर काल में आये थे।

(2) दैमाबाद से एक ताम्ररथ प्राप्त हुआ है।

स्मरणीय तथ्य

प्रमुख स्थानों से प्राप्त साक्ष्य

(1) पशुपति महादेव मुहर ——— मोहनजोदड़ो

(2) कास्य का इक्का और बैलगाड़ी ——— हड़प्पा, मोहनजोदड़ो

(3) श्रृंगार बक्सा ——— हड़प्पा

(4) "H" एवं R.37 कब्रिस्तान ——— हड़प्पा

(5) तीन भागों में विभक्त शहर ——— धौलावीरा

(6) घोड़े का दाँत ——— सुतकागेंडोर एवं राणाघुंडई

(7) कांसा का दर्पण ——— लोथल

(8) सामने से मकान में प्रवेश ——— लोथल

(9) मानव कंकाल (शायद नरसंहार के द्वारा) ——— मोहनजोदड़ो

(10) मंदीर जैसा भवन ——— मोहनजोदड़ो

(11) मिट्टी (Terakota) का जहाज ——— लोथल

(12) अग्निवेदिका ——— कालीबंगा एवं लोथल

(13) घोड़े की हड्डी ——— सुरकोटदा

(14) निचला शहर दुर्गीकृत ——— कालीबंगा एवं बनवाली

Scanned by TapScanner

(15) हड़प्पा पूर्व एवं हड़प्पा कालीन संस्कृति का प्रमाण — कालीबंगा एवं बनवाली
(16) दवात — चान्हुदड़ो
(17) कॉस्मेटिक शाहर — चान्हुदड़ो
(18) ऊरकी हड्डी — काली बंगा
(19) मुहरपर गेंडा का निशान — आमरी
(20) रेसाकोश का हल प्रतिरूप — बनवाली
(21) मिट्टी का बना हल — राखीगढ़ी
(22) कब्रिस्तान — हड़प्पा, लोथल, कालीबंगा
(23) पूर्व हड़प्पा एवं उत्तर हड़प्पा के साक्ष्य — सुतकोतदा ढ़ोलावीरा, राखीगढ़ी
(24) शवों का ढेर — मोहनजोदड़ो
(25) पर्की काल के सुरक्षा के साक्ष्य — हड़प्पा
(26) अन्नागार — मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा
(27) सभाकक्ष — मोहनजोदड़ो
(28) महादेवी की चित्रित मुहर — मोहनजोदड़ो
(29) मिट्टी का बना मानव मस्तिष्क — कालीबंगा
(30) शतरंज जैसा खेल — लोथल
(31) चूड़ी बनाने का केन्द्र — चान्हुदड़ो, कालीबंगा और बालाकोट
(32) तांबे का गेंडा — दैमाबाद
(33) तांबे का रथ — दैमाबाद
(34) तांबे का हाथी — दैमाबाद
(35) माल गोदाम — लोथल
(36) कांस्य की नर्तकी — मोहनजोदड़ो
(37) तांबे का बैल — काली बंगा
(38) युग्म शवधान — लोथल
(39) व्यापारिक भवन — लोथल
(40) एक कमरे का बैरक — हड़प्पा
(41) मादा जननांग का पत्थर का प्रतीक — हड़प्पा
(42) 6 प्रकार के मिट्टी के बर्तन के प्रकार — कालीबंगा
(43) मिट्टी का बना घोड़ा — लोथल
(44) गलीयों में गन्दी बाढ़ी में दफ़नाए गए या बीनापद्धति ...

— गये शव ———————— मोहनजोदड़ो

(45) जारपर चित्रकारी जो पंचतंत्र के चालाक लोमड़ी के कहानी के सदृश्य है — लोथल

(46) धातु कारखाने की फैक्ट्री ———— लोथल

(47) मनका बनाने का कारखाना ——— लोथल, चान्हुदड़ो

(48) ईरान की खाड़ी क्षेत्र की मुहर ——— लोथल

(49) कि जोकी मुहर अवशेष नहीं —— आलमगीरपुर

(50) दाढ़ी वाले पुजारी की मूर्ती ——— मोहनजोदड़ो

प्रमुख स्थल और प्राप्त सामग्री

स्थल	प्राप्त सामग्री
हड़प्पा	सिर विहिन पुरुष का धड़, योगी की पत्थर की मूर्तीं, नृत्य मुद्रा के प्रस्तर मूर्तीं, अन्न भण्डार गृह, गेहुँ, जौ, गरुड़ के चित्र युक्त मुद्रा
मोहनजोदड़ो	— भुना हुआ सुती कपड़े का टुकड़ा, पुजारी का सीट नृत्य की मुद्रा में स्त्री की कांस्य मूर्ती, मातृ देवी की मूण्य मूर्ती (मिट्टी), पशुपती की मुहर, लिंगीय प्रस्तर, ताम्बे का ढेर, बरतन, पत्थर और मिट्टी के पत्के बर्तन, विशाल स्नानागार, विशाल अन्नागार
कालीबंगा	बेलनाकार मुहर, अग्निहवन कुण्ड, कब्रिस्तान, जौ, हल का चिन्ह, चिड़ीयां
लोथल	घोड़ा का चित्र, दिवार घिरीबस्ती, गोदीवाड़ा, ताम्बे की पक्षी, बैल, खरगोश, और कुत्ते की प्रतिमा, अग्नि पुजा सम्बन्धि वस्तुएं, चावल, बाजारा

Scanned by TapScanner